# आधी आबादी

हर सन्डे वूमेन्स डे

संस्करण – रविवार, 12 मई 2024, अंक – 53


## विशेष संपादकीय

### मदर्स डे पर दुनिया की हर माँ को कहें शुक्रिया!

– चारुल मल्लिक

मां शब्द के साथ कई भावनाएं जुड़ी होती हैं। एक बच्चे के लिए उसकी मां की क्या अहमियत होती है, इसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। मां के त्याग और योदान को चुकाने की हम कितनी भी कोशिश क्यों न कर लें, लेकिन ऐसा करना नामुमकिन है। इसलिए उनके त्याग और उनके सभी योगदानों को सम्मानित करने के लिए हर साल मई के दूसरे रविवार को मदर्स डे मनाया जाता है। इस दिन सिर्फ मां को नहीं बल्कि, हर उस महिला को धन्यवाद दिया जाता है, जो हमारे जीवन में मां की भूमिका निभाती हैं, हमारा ख्याल रखती हैं और हमारी चिंता करती हैं। मां बिना किसी स्वार्थ और चाह के अपना पूरा जीवन अपने बच्चों को समर्पित कर देती है। मां चाहे होम मेकर हो या कोई वर्किंग वुमन हो, वह हमेशा अपने बच्चे की चिंता में लगी रहती है। वे हर स्थिति में अपने बच्चे को पहली प्राथमिकता देती हैं। वे ये सभी काम अपने बच्चों के प्रति प्यार के कारण करती हैं और बदले में कुछ नहीं मांगतीं। इसलिए Mother's Day उन्हें थैंक्यू बोलने का एक अच्छा तरीका है।

मदर्स डे मनाने की शुरुआत एना रीव्स जार्विस ने की थी। इसके पीछे कहानी ऐसी है कि इस दिन के जरिए एना अपनी मां एन रीव्स जार्विस को श्रद्धांजलि देना चाहती थीं। उनकी मां, गृहयुद्ध के समय एक एक्टिविस्ट की तरह काम करती थीं। जब 1904 में उनकी मृत्यु हुई, तो उनकी याद में उनकी पहली पुण्यतिथि पर वेस्ट वर्जिनिया में एक आयोजन किया, जिसमें उन्होंने अन्य महिलाएं, जो मां बन चुकी थीं, को सफेद कार्नेशन दिए, जो उनकी मां के पसंदीदा फूल थे। इसके बाद उन्होंने फैसला किया कि हर साल Mother's Day मनाया जाना चाहिए, जिसके लिए उन्होंने कई कैंपेन किए और अंत में अमेरिकी राष्ट्रपति वुड्रो विल्सन ने 1914 में हर साल मई के दूसरे रविवार को मदर्स डे की तरह मनाने की घोषणा की। इस तरह हुई मदर्स डे मनाने की शुरुआत।

हम आधी आबादी के तमाम पाठकों से यही कहना चाहेंगे कि अपनी ही नहीं बल्कि दुनिया की हर माँ का शुक्रिया अदा करें। इन्होंने ही अपने प्यार और करुणा से अभी तक इस दुनिया को सहेज कर रखा है। ऐसे में माँ की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। अगर माँ अपने बच्चों को अच्छी परवरिश दे सकें तो लड़का-लड़की में भेदभाव समेत कई मुद्दों को आसानी से सुलझाया जा सकता है। ये वही माएँ हैं जो न सिर्फ बेटियों को बल्कि बेटों की भी परवरिश करती हैं। इन्हें चाहिए कि ये अपने बेटों की परवरिश ऐसे करे कि इस समाज में लड़कियां भयमुक्त होकर जी सकें। लेकिन, ऐसा हो नहीं रहा है। आप शायद हमारा इशारा समझ रही होंगी। आइए इस मदर्स डे हम माएँ भी यह प्रण लें कि कम से कम अपने घर के बच्चों को हम इतनी सीख जरूर देंगे कि वो महिलाओं और लड़कियों का सम्मान करना कभी न भूलें।

# नशे में धुत लड़कियों का हाई वोल्टेज ड्रामा, पुलिस के कपड़े तक फाड़ डाले!

मुंबई में रहते हुए यह मैंने अक्सर देखा है कि देर रात लड़कियां अपने समूह में बैठकर किसी ऑटो या कार में शराब पी रही हैं। चूंकि यह मुंबई है तो यहाँ इस तरह के दृश्य आम हैं। मैं इन लड़कियों को इग्नोर करके आगे बढ़ जाता हूँ। लड़के भी ऐसा करते ही हैं। लेकिन, शुक्रवार को जो हुआ वह सुनकर आप भी सन्न रह जायेंगे। दरअसल मुंबई से सटे पालघर के विरार शहर से शुक्रवार रात एक हैरान कर देने वाली ख़बर आई है। नशे में टल्ली कुछ लड़कियों ने पहले एक 'बार' के बाहर हुडदंग की। इसके चलते वहां पर भीड़ जमा होने लगी। सूचना मिलने पर जब पुलिस मौके पर पहुंची तो वे लड़कियां पुलिसकर्मियों से भी उलझ गईं। उनके कपड़े फाड़ डाले। पुलिस ने किसी तरह से स्थिति को काबू में किया। लड़कियों की हुडदंग का यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद पुलिस एक्शन में आई है। पुलिस ने इन लड़कियों के खिलाफ मामला दर्ज किया है।

■ हीरेंद्र झा

जानकारी के अनुसार तीनों लड़कियों विरार शहर के पंखा फास्ट नाम के बार एंड रेस्टोरेंट में डिनर के लिए पहुंची थीं। वहां ड्रिंक करने के बाद ये लड़कियां नशे में धुत हो गईं। अंदर इनकी दूसरे गुट से कुछ कहासुनी हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने इन्हें बाहर निकाला तो ये बाहर हुड़दंग करने लगीं। नशे में धुत लड़कियों की अजीबोगरीब हरकतों को देखकर वहां भीड़ जुटने लगी। पुलिस ने स्थिति को संभालने के अतरिक्त पुलिस को बुलाया और इन्हें काबू में करने की कोशिश की तो उन्होंने पुलिसकर्मियों से गालीगलौच शुरू कर दी। इतना ही नहीं पुलिसवालों की वर्दी को खींचने लगीं।

सोशल मीडिया पर वायरल हुए इस मामले में यह भी सामने आया है कि एक लड़की ने दांतों से एक पुलिसकर्मी को काट लिया। विरार शहर पुलिस के अनुसार लड़कियों के पब्लिक प्लेस पर हुड़दंग और करने और पुलिस से उलझने को लेकर मामला दर्ज किया गया है। यह अर्नाला पुलिस स्टेशन में पुलिस को चोट पहुचंने के आरोप में धारा 353, 323, 325, 504 और 506 के तरह कार्रवाई की गई है। पुलिस ने लड़कियों को पुलिस अरेस्ट करने के बाद कानूनी कार्रवाई शुरू की है। कोर्ट ने तीनों लड़कियों को एक दिन के लिए पुलिस कस्टडी में भेजा है।

यह सच है कि आधुनिकता बढ़ी है और आधुनिकता के नाम पर आज़ादी भी बढ़ी है लेकिन उस आज़ादी का इस तरह से गलत फायदा उठाना क्या किसी को शोभा देता है? नशे में उत्पात करती इन लड़कियों से मैं यही कहना चाहूँगा कि आज देश में ऐसी कई लड़कियां हैं जिनके माँ-बाप उन पर दुनिया भर की पाबंदियाँ लगा कर रखते हैं, ऐसे में जब उन तक तुम्हारे उत्पात की ख़बर पहुंचेगी तो क्या वो अपनी बेटियों को निश्चिंत होकर बड़े शहर भेज सकेंगे? तुम खुशकिस्मत हो जो बार जाने का मौका मिल रहा है तो ऐसे में तुम्हारी जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। तुम दुनिया की नज़र में हो, तुम कुछ भी ऐसा तो न करो जिससे तुम्हारे किए की सजा दूसरी लड़कियों को मिले।

## इंटरव्यू

# मेरा दरवाजा हर जाति और धर्म के लोगों के लिए खुला हुआ है: मेनका गांधी

साल 2019 के लोकसभा चुनाव में मेनका गांधी उत्तर प्रदेश की सुल्तानपुर लोकसभा सीट से सांसद बनी थीं। भारतीय जनता पार्टी ने एक बार फिर उन्हें इस सीट पर अपना उम्मीदवार बनाया है। हालांकि पार्टी ने इस बार मेनका गांधी के बेटे और पीलीभीत से सांसद वरुण गांधी का टिकट काट दिया है। उनकी जगह पार्टी ने कांग्रेस से बीजेपी में आए और योगी सरकार में मंत्री जितिन प्रसाद को यहां से उतारा है। वरिष्ठ पत्रकार राघवेंद्र राघव ने इस बीच मेनका गांधी से बात की है, जो आप यहाँ पढ़ सकते हैं।

**सवाल :** वरुण गांधी का टिकट कटने पर आप क्या कहना चाहेंगी?

**मेनका :** वरुण काबिल इंसान हैं और जब उन्हें टिकट नहीं मिला तो मुझे अच्छा नहीं लगा था लेकिन यह एक चुनाव ही है। वह 28 साल की उम्र में पहली बार सांसद बने थे और तब से लाखों लोगों का दिल जीतते हुए आ रहे हैं। उनकी काबिलियत लिखने, प्रचार करने के अलावा कई चीज़ों में है। उन्होंने अर्थव्यवस्था पर दो बेस्ट सेलर किताबें लिखी हैं। वह कविता भी लिखते हैं। वह बहुत आगे जाएंगे।

**सवाल :** वरुण आपके लिए चुनाव प्रचार क्यों नहीं कर रहे हैं?

**मेनका :** वरुण आना चाहता है, लेकिन इस वक्त ज़रूरत नहीं है, हालांकि मैं चाहती हूं कि यहां पूरा परिवार रहे। हम लोग काफी व्यस्त हैं। इस वक्त चुनाव प्रचार अच्छा चल रहा है। फिलहाल सोने पर सुहागे की ज़रूरत नहीं है। मुझे लगा तो मैं जरूर वरुण को बुलाऊंगी।

**सवाल :** टिकट कटने के बाद ये कयास लगाए गए कि वरुण गांधी निर्दलीय या फिर कांग्रेस का हाथ पकड़ सकते हैं?

**मेनका :** ये सारे कयास मीडिया लगाती है। सुल्तानपुर में चाय की दुकान पर बैठकर हर घंटे लोग सरकारें गिराते और बनाते हैं, यही हाल अखबारों का है, लेकिन बदलाव तो कुछ नहीं हुआ। वरुण अभी भी वहीं हैं, जहां वह पहले थे।

**सवाल :** राहुल गांधी की यात्रा को कैसे देखती हैं?

**मेनका :** मुझे नहीं लगता कि वो इवॉल्व हुए हैं। सिर्फ पदयात्रा करने से कोई इवॉल्व नहीं होता। मुद्दे उठाना, गहराई से स्टडी करना, नेतृत्व देना और बहादुरी दिखाना ये चाहिए होता है।

**सवाल :** इस लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री मोदी ने 400 पार का नारा दिया है। क्या वाकई बीजेपी इस आंकड़े को पार कर लेगी?

**मेनका :** चुनाव के समय मुझे सिर्फ सुल्तानपुर दिखाई देता है। अगल-बगल और यहां तक की देश भी बाद में दिखाई देता है। पहले सुल्तानपुर की मुसीबतें और लोगों की ख्वाहिशें दिखती हैं। अगर उन्होंने (पीएम मोदी) 400 का नारा दिया है तो हो ही जाएगा या उसके नज़दीक रहेगा।

**सवाल :** बीजेपी पर ध्रुवीकरण को बढ़ाने के आरोप अक्सर लगते रहते हैं, आप क्या कहना चाहेंगी?

**मेनका :** आप मेरे बारे में बता कर लें। पांच साल में हर जाति, कौम का व्यक्ति मेरे पास आया। हजारों लोगों की मदद हुई। हम फिर कोशिश कर रहे हैं कि मुद्दे जाति-धर्म के ना हों, ये मुद्दे तरक्की के हों, अभी भी मैं वही कह रही हूं कि खुशी से आइये, मेरा घर, मेरा दिल खुला है सबके लिए।

## हलचल

**राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने पद्म पुरस्कार किए वितरित**

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 132 हस्तियों को पद्म पुरस्कार 2024 से सम्मानित किया। पद्म अवॉर्ड के नामों की घोषणा इस गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर की गई थी। ये पुरस्कार कला, सामाजिक कार्य, विज्ञान, चिकित्सा जैसे विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिए जाते हैं। इस लिस्ट में पहली भारतीय महिला महावत पार्बती बरुआ का नाम भी शामिल है। पद्मश्री से सम्मानित पार्बती बरुआ को 'हाथी की परी' के नाम से भी जाना जाता है। वहीं सुप्रीम कोर्ट की पहली महिला जज दिवंगत फातिमा बीवी को मरणोपरांत पद्म भूषण दिया गया। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने दिल्ली में राष्ट्रपति भवन में नागरिक अलंकरण समारोह के दौरान सभी नामित लोगों को पद्म पुरस्कार दिया। मालूम हो कि भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न के बाद पद्म पुरस्कार सबसे महत्वपूर्ण सम्मान माने जाते हैं। इन्हें तीन श्रेणियों में पद्म विभूषण, पद्मभूषण और पद्मश्री के तौर पर दिया जाता है। पद्म विभूषण राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने दिग्गज अदाकारा वैजयंतीमाला बाली और अभिनेता कोनिडेला चिरंजीवी को पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया।

**प्रज्वल रेवन्ना मामले में नया मोड़, राष्ट्रीय महिला आयोग ने क्या कहा?**

राष्ट्रीय महिला आयोग ने कहा कि महिलाओं के यौन शोषण के अभियुक्त प्रज्वल रेवन्ना के खिलाफ कोई भी पीड़ित महिला शिकायत दर्ज कराने के लिए आगे नहीं आई है। इस खबर को द हिंदू अखबार ने प्रमुखता से छापा है। आयोग का कहना है कि उसके पास सिर्फ एक महिला पहुंची थी। आयोग के मुताबिक इस महिला शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया कि उसे जनता दल सेक्युलर के नेता और हसन सीट से सांसद प्रज्वल रेवन्ना के खिलाफ फ़र्ज़ी शिकायत दर्ज करने के लिए मजबूर किया गया था। प्रज्वल रेवन्ना पर यौन उत्पीड़न, सैकड़ों सेक्स वीडियो रिकॉर्ड करने, धमकाने और साज़िश रचने के आरोप हैं। पुलिस ने प्रज्वल रेवन्ना और उनके पिता एच डी रेवन्ना, दोनों पर यौन शोषण का मामला दर्ज किया है। इस मामले में कर्नाटक सरकार ने एसआईटी का गठन किया है जो यौन शोषण के मामलों की जांच कर रही है। प्रज्वल रेवन्ना पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा के पोते हैं. प्रज्वल रेवन्ना के पिता कर्नाटक में विधायक हैं और चाचा पूर्व मुख्यमंत्री एचडी कुमारस्वामी हैं। मीडिया में चल रही खबरों को देखते हुए राष्ट्रीय महिला आयोग ने इस मामले में स्वत: संज्ञान लिया था और कर्नाटक पुलिस महानिदेशक को तीन दिनों के अंदर तत्काल कार्रवाई करने को कहा था। अखबार के मुताबिक महिला आयोग ने उस दावे को खारिज किया है जिसमें कहा गया था कि प्रज्वल रेवन्ना के खिलाफ़ शिकायत दर्ज करवाने के लिए 700 महिलाएं सामने आई हैं।

**अमेठी में सियासी लड़ाई दिलचस्प, स्मृति ईरानी के खिलाफ चुनाव प्रचार में उतरी बाप-बेटी की जोड़ी**

लोकसभा 2024 के लिए सभी की निगाहें उत्तर प्रदेश की अमेठी लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र पर भी टिकी हुई है। करीब 2 दशक बाद ऐसा हुआ है कि जब अमेठी के चुनावी संग्राम में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ओर गांधी परिवार की बजाय कोई और चुनावी मैदान में है। अमेठी से कांग्रेस ने भारतीय जनता पार्टी की स्मृति ईरानी के मुकाबले किशोरी लाल शर्मा को प्रत्याशी बनाया है। अमेठी में दोनों दल अपनी ओर से चुनाव प्रचार में लगे हुए हैं। इस बीच केएल शर्मा की बिटिया अंजलि भी पिता के लिए प्रचार मैदान में उतर गईं हैं। यह जानकारी खुद केएल शर्मा ने दी। सोशल मीडिया साइट एक्स पर उन्होंने लिखा- मेरी बिटिया अंजलि को प्यार करते अमेठी के लोग, हमारे परिवार का असली घर अमेठी है। एक अन्य पोस्ट में शर्मा ने लिखा- विधान सभा क्षेत्र के डीह ब्लाक में महिलाओ से मुलाकात व संवाद करती मेरी बेटियो अंजलि शर्मा को मिले आपार स्नेह और आशीर्वाद का ऋणी रहूँगा।शर्मा ने लिखा- गांव देहात के सम्मानित लोगों के साथ मेरी बिटिया अंजली शर्मा ने मेरे चुनाव प्रचार की कमान संभाली।

**अरविंद केजरीवाल की जमानत पर आया ममता बनर्जी का रिएक्शन, कहा- चुनाव में मिलेगी मदद!**

दिल्ली एक्साइज पॉलिसी मामले में अरविंद केजरीवाल को अंतरिम जमानत मिलने पर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने खुशी जताई है। ममता बनर्जी ने कहा कि मुझे अरविंद केजरीवाल को देखकर बहुत खुशी हुई कि उन्हें अंतरिम जमानत मिल गई है। मौजूदा चुनाव के लिहाज से यह काफी मददगार होगा। दरअसल, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को सुप्रीम कोर्ट की दो जजों वाली बेंच ने अंतरिम जमानत दे दी है। कोर्ट ने उन्हें 2 जून को वापस सरेंडर करने को कहा है। 21 मार्च से हिरासत में चल रहे अरविंद केजरीवाल अब दो जून तक लोकसभा चुनावों में प्रचार कर सकेंगे। अंतरिम जमानत की घोषणा करते हुए कोर्ट ने कहा कि वो केजरीवाल की गिरफ्तारी को चुनौती देने वाले पूरे मामले की सुनवाई जल्द ही खत्म करेंगे। साथ ही कोर्ट ने सुनवाई के दौरान ये भी कहा कि अगस्त 2022 में रजिस्टर किए गए केस में केजरीवाल को डेढ़ साल बाद गिरफ्तार किया था। जस्टिस संजीव खन्ना ने कहा, "गिरफ्तारी पहले या बाद में की जा सकती थी। 21 दिन से क्या फर्क पड़ता है।" सीएम अरविंद केजरीवाल के वकील शादान फरासत ने मीडिया से बातचीत के दौरान कहा कि 20 दिन के लिए अंतरिम जमानत दी जा रही है। वे चुनावी प्रचार में क्या कहेंगे क्या नहीं इस पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाए गए हैं। 2 जून तक उन्हें अंतरिम जमानत दी गई है।

**अगर यह चुनाव सही से हुआ तो BJP की 200 से ज्यादा सीटें नहीं आएंगी: प्रियंका गांधी**

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी लगातार अमेठी में प्रचार कर रही हैं। उन्होंने शुक्रवार को दावा किया कि अगर यह चुनाव सही से हुआ तो बीजेपी की 200 से ज्यादा सीटें नहीं आयेंगी। उन्होंने कहा कि बीजेपी वाले क्या जानें कि हमारा अमेठी और रायबरेली से क्या रिश्ता है, जनता जवाब मांग रही है। पत्रकारों से बात करते हुए प्रियंका गांधी ने कहा- 'हमारा आधार है क्योंकि जो भी गारंटियां हम दे रहे हैं। जहां-जहां हमने गारंटी दी है, वहां हमने करके दिखाया है। कर्नाटक में जो गरीब परिवार है उसकी सबसे बड़ी महिला के खाते में पैसे जा रहे हैं। यही हमारा आधार है। उनका क्या आधार है? 45 साल में सबसे ज्यादा बेरोजगारी आज है, यही आधार है क्या?' प्रियंका गांधी ने स्मृति ईरानी पर कहा, 'ये यहां क्यों आई हैं? ये जनता, किसान, गरीब के लिए नहीं आती हैं, सिर्फ वोट के लिए आई हैं। वह कितने गांव में गई हैं? वह क्या जानें काम क्या होता है? उन्हें सिर्फ झूठ बोलना आता है.' उन्होंने कहा कि यहाँ की जनता से बीजेपी वाले क्या जानें कि हमारा रिश्ता क्या है? पीएम कब गांव जाते हैं। महिलाओं पर अत्याचार हुआ क्या किया? विधायकों को तोड़कर सरकारें बनाईं तो लोगों कहा कि मोदी का मास्टरस्ट्रोक, बस सत्ता चाहिए।

# माधवी लता और ओवैसी के बीच कड़ा मुकाबला, क्या बदलेगा हैदराबाद का निजाम? जानें- समीकरण

तेलंगाना की हैदराबाद सीट पर हाई-वोल्टेज चुनावी लड़ाई की उम्मीद की जा रही है। यहां मुख्य मुकाबला मौजूदा सांसद ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (AIMIM) के असदुद्दीन ओवैसी और भारतीय जनता पार्टी की माधवी लता के बीच माना जा रहा है। कांग्रेस ने इस सीट से मोहम्मद वलीउल्लाह समीर को टिकट दिया है। हैदराबाद में लोकसभा चुनाव के चौथे चरण में 13 मई को मतदान होगा। दो मुस्लिम उम्मीदवारों और बीजेपी की माधवी लता के साथ, हैदराबाद में मुकाबला एक दिलचस्प लड़ाई का गवाह बनने जा रहा है। बीजेपी ने बार-बार दावा किया है कि वे चार बार के सांसद असदुद्दीन औवेसी को मात देने जा रहे हैं।

### कौन हैं माधवी लता?

2004 के लोकसभा चुनाव के बाद से ही ओवैसी हैदराबाद सीट जीतते आ रहे हैं। हालांकि, इस बार बीजेपी ने अपने हिंदू चेहरे और तीन तलाक अभियान कार्यकर्ता माधवी लता को मैदान में उतारा है। एक सांस्कृतिक कार्यकर्ता होने के अलावा, माधवी लता हैदराबाद के विरिंची अस्पताल की अध्यक्ष, एक पेशेवर भरतनाट्यम नर्तक और तीन बच्चों की मां हैं।

### ओवैसी और माधवी के पास कितनी दौलत?

माधवी लता ने अपने परिवार की चल और अचल संपत्ति 218.28 करोड़ रुपये घोषित की। लता के परिवार पर 27 करोड़ रुपये की देनदारी है। भाजपा उम्मीदवार के परिवार के पास विरिंची लिमिटेड में 94.44 करोड़ रुपये की कीमत के 2.94 करोड़ शेयर हैं। ओवैसी की घोषित पारिवारिक संपत्ति ₹23.87 करोड़ है। माधवी लता हैदराबाद से सबसे अमीर उम्मीदवारों में से एक बनकर उभरी हैं।

### आसान नहीं होगा मुकाबला

माधवी लता के लिए यह बिल्कुल भी आसान मुकाबला नहीं होने वाला है क्योंकि उनके मुख्य प्रतिद्वंद्वी असदुद्दीन औवेसी पिछले चुनावों में हैदराबाद में भारी अंतर से जीतते रहे हैं। 2019 के चुनाव में ओवैसी ने यह सीट करीब तीन लाख वोटों के अंतर से जीती थी जबकि 2014 में 2.5 लाख के करीब जीत का अंतर था।

### कांग्रेस लगा सकती है ओवैसी के वोटबैंक में सेंध

हालांकि, कांग्रेस द्वारा एक मुस्लिम उम्मीदवार को मैदान में उतारने से ओवैसी के वोटों में कटौती हो सकती है और भाजपा को फायदा पहुंच सकता है। 2011 की जनगणना के अनुसार, हैदराबाद में 64.9 प्रतिशत हिंदू, 30.1 प्रतिशत मुस्लिम, 2.8 प्रतिशत ईसाई, 0.3 प्रतिशत जैन, 0.3 प्रतिशत सिख और 0.1 प्रतिशत बौद्ध हैं।

## सर्राफा बाज़ार

| 22 कैरेट सोना | चांदी |
|---|---|
| ₹68,130 | ₹90,500 |
| प्रति 10 ग्राम | प्रति किलो |

# मायावती ने भतीजे आकाश आनंद को नेशनल को-ऑर्डिनेटर के पद से हटाया

■ दीपक मण्डल

बहुजन समाज पार्टी की प्रमुख मायावती ने मंगलवार देर रात अपने भतीजे और पार्टी के नेशनल को-ऑर्डिनेटर आकाश आनंद को उनके पद से हटाने का ऐलान किया। मायावती ने 'पूर्ण परिपक्वता' हासिल करने तक उन्हें अपने उत्तराधिकारी की ज़िम्मेदारियों से भी मुक्त कर दिया है। देश में लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण की वोटिंग ख़त्म होने के चंद घंटे बाद ही मायावती के इस ऐलान ने पार्टी कार्यकर्ताओं, राजनीतिक दलों और विश्लेषकों को हैरत में डाल दिया है। मायावती ने मंगलवार को देर रात अपने ट्वीट में लिखा, "विदित है कि बीएसपी एक पार्टी के साथ ही बाबा साहेब डॉक्टर भीमराव आम्बेडकर के आत्म-सम्मान व स्वाभिमान तथा सामाजिक परिवर्तन का भी मूवमेन्ट है जिसके लिए मान्य. श्री कांशीराम जी व मैंने ख़ुद भी अपनी पूरी ज़िन्दगी समर्पित की है और इसे गति देने के लिए नई पीढ़ी को भी तैयार किया जा रहा है।" उन्होंने लिखा, "इसी क्रम में पार्टी में, अन्य लोगों को आगे बढ़ाने के साथ ही, श्री आकाश आनन्द को नेशनल कोऑर्डिनेटर व अपना उत्तराधिकारी घोषित किया, किन्तु पार्टी व मूवमेन्ट के व्यापक हित में पूर्ण परिपक्वता आने तक अभी उन्हें इन दोनों अहम ज़िम्मेदारियों से अलग किया जा रहा है। जबकि इनके पिता श्री आनन्द कुमार पार्टी व मूवमेन्ट में अपनी ज़िम्मेदारी पहले की तरह ही निभाते रहेंगे।"

सवाल ये है कि मायावती ने ऐसे वक़्त पर ये कदम क्यों उठाया, जब लोकसभा चुनाव के चार चरण बाकी हैं। वो भी पार्टी के स्टार प्रचार आकाश आनंद के ख़िलाफ़ जिन्होंने पिछले कुछ समय से अपनी रैलियों से बीएसपी को मतदाताओं के बीच काफ़ी चर्चा में ला दिया था।

आकाश आनंद अपनी पिछली कुछ चुनावी रैलियों में बेहद आक्रामक अंदाज़ में दिखे हैं। इन रैलियों में आक्रामक भाषणों की वजह से उनके ख़िलाफ़ चुनाव आचार संहिता के उल्लंघन के आरोप में दो केस दर्ज किए गए थे। 28 अप्रैल को उत्तर प्रदेश में सीतापुर की रैली में उन्होंने योगी आदित्यनाथ की सरकार की 'तालिबान से तुलना' करते हुए उसे 'आतंकवादियों' की सरकार कहा था। इसके अलावा उन्होंने लोगों से कहा था कि वो ऐसी सरकार को जूतों से जवाब दे। इस आक्रामक भाषण पर हुए मुक़दमे के बाद ही आकाश आनंद ने 1 मई को ओरैया और हमीरपुर की अपनी रैलियां रद्द कर दी थीं। पार्टी की ओर से ये कहा गया है कि परिवार के एक सदस्य के बीमार पड़ने की वजह से ये रैलियां रद्द की गई हैं।

लेकिन राजनीतिक सूत्रों का कहना है कि मायावती आकाश आनंद की ओर से इस्तेमाल किए जाने वाले शब्दों से खुश नहीं हैं। इस आक्रामक शैली से उन्हें चुनाव में अपनी पार्टी का फ़ायदा होने से ज़्यादा नुक़सान की आशंका सताने लगी थी। वरिष्ठ पत्रकार और राजनीतिक विश्लेषक सुनीता एरोन ने मायावती के इस फ़ैसले पर बीबीसी से बात करते हुए कहा, "मायावती आकाश आनंद को लेकर ओवर प्रॉटेक्टिव हैं। वो नहीं चाहतीं कि इस समय वो कोई मुश्किल में फंसें और इससे भी बड़ी बात ये है कि वो इस समय बीजेपी से अपना संबंध नहीं बिगाड़ना चाहतीं।" सुनीता एरोन कहती हैं, "मायावती का ये कहना ठीक है कि आकाश आनंद अभी परिपक्व नहीं हैं। दरअसल आकाश आनंद ने चुनावों के बीच ये कहना शुरू कर दिया था कि उनकी पार्टी चुनाव के बाद किसी से भी गठबंधन कर सकती है। मेरे ख़्याल से उन्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए थ।" वो कहती हैं, "ये ठीक है कि बीएसपी के संस्थापक कांशीराम भी कहते थे कि अपने लोगों के हित में वो किसी के साथ भी जा सकते हैं। लेकिन वो एक सैद्धांतिक बात थी। लेकिन आकाश आनंद ने इसे इस तरह कहा जैसे पार्टी की कोई विचारधारा ही नहीं है।"

राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि मायावती और उनकी पार्टी के लिए ये लोकसभा चुनाव 'करो या मरो' का चुनाव है। 2019 के लोकसभा चुनाव में बीएसपी यूपी में समाजवादी पार्टी के साथ मिलकर लड़ी थी। पार्टी ने दस सीटें जीती थीं लेकिन इसे सिर्फ़ 3.67 फीसदी वोट मिले थे। वहीं 2009 के चुनाव में इसने 21 सीटें जीती थीं। जबकि 2022 के विधानसभा चुनाव में यूपी में वो सिर्फ एक सीट जीत पाई। चुनाव में इस निराशाजनक प्रदर्शन के बाद बीएसपी ने बीजेपी के ख़िलाफ़ अपने सुर नरम कर लिए थे। वरिष्ठ पत्रकार और राजनीतिक विश्लेषक शरद गुप्ता कहते हैं कि मायावती के बीजेपी से गठबंधन के कयास लगाए जाते रहे हैं।

शायद यही वजह है कि मायावती ने आकाश आनंद को नेशनल को-ऑर्डिनेटर के पद से हटाकर हालात संभालने की कोशिश की है।

(साभार: बीबीसी हिन्दी)

# सपने देखने और साकार करने के जज्बे की कहानी है श्रीकांत, इन दो महिलाओं ने बदला श्रीकांत का जीवन

▪ स्मिता श्रीवास्तव

'मैं भाग नहीं सकता सिर्फ लड़ सकता हूं'। दृष्टिबाधित उद्योगपति श्रीकांत बोला की जिंदगी पर बनी फिल्म का यह संवाद उनकी सोच और जज्बात को बयां करने के लिए काफी है। दृष्टिबाधित होने की चुनौतियों के बीच उन्होंने सपने देखे और उन्हें साकार करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उन्हीं के जीवन संघर्ष पर तुषार हीरानंदानी ने फिल्म 'श्रीकांत: आ रहा है सबकी आंखे खोलने' बनाई है, जो कई मायने में आम लोगों की आंखें खोलने का काम करेगी। यह नेत्रहीनों के प्रति बेचारा, इसके साथ बुरा हुआ, यह तो ट्रेन में गाना गाने, भीख मांगते हैं, जैसी परंपरागत धारणाओं को तोड़ने का काम बखूबी करती है।

## क्या है फिल्म की कहानी?

कहानी की शुरुआत आंध्र प्रदेश के मछलीपट्टनम में एक किसान परिवार में नेत्रहीन बच्चे के जन्म से होती है। पिता अरमानों से प्रख्यात क्रिकेटर श्रीकांत के नाम पर उसका नामकरण करते हैं। कुछ ही पलों में बेटे के नेत्रहीन होने का पता चलने पर उनका दिल टूट जाता है। रिश्तेदारों उसे कचरा बताकर मारने का सुझाव देते हैं। श्रीकांत (राजकुमार राव) के जीवन की दुश्वारियों की कल्पना करके पिता अपने नवजात बेटे को जिंदा जमीन में गाड़ने जाता है, लेकिन पत्नी की बेटे के प्रति ममता उसे रोक लेती है। जैसे-जैसे श्रीकांत बड़ा होता है, उसकी बुद्धिमत्ता सामने आती है। वह क्लास में अव्वल आता है। सहपाठियों से मिलने वाले ताने, प्रताड़ना और अपमान उसके आत्मविश्वास को डिगा नहीं पाते। आगे की शिक्षा के लिए उसे दृष्टिबाधितों के स्कूल में भेजा जाता है। वहां एक सच बोलने के लिए उसे स्कूल से निकाल दिया जाता है। तब शिक्षिका देविका (ज्योतिका) उसका संबल बनती है। उसकी शिक्षा-दीक्षा और पालन पोषण की जिम्मेदारी उठाती है। दसवीं में अच्छे अंक आने के बावजूद 11वें में साइंस लेने की जिद के चलते सिस्टम से लड़ाई, इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए आइआइटी में प्रवेश न मिलने पर मैसाच्युसेट्ट इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलाजी (एमआइटी) जाकर पढ़ाई करना। वहां से लौटकर उद्योग स्थापित करने में राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम की मदद मिलना, फिर रवि (शरद केलकर) का साथ आना। उस दौरान की चुनौतियों, राजनीति में झुकाव, अहंकार आने, स्वाति (अलाया एफ) के साथ प्रेम और पहचान स्थापित करने के सफर को दर्शाती है।

## कैसा है स्क्रीनप्ले और अभिनय?

जगदीप सिद्धू और सुमित पुरोहित लिखित कहानी गंभीर विषय को हल्के-फुल्के अंदाज में चित्रित करते हुए शिक्षा प्रणाली की खामियां, दृष्टिबाधितों के साथ होने वाले सामाजिक व्यवहार समेत कई मुद्दों को छूती है। फिल्म कहीं से बोझिल नहीं होती। यह फिल्म मुख्य रूप से श्रीकांत के टैलेंट, उनकी चुनौतियों के साथ उनमें आए बदलावों को ईमानदारी के साथ दर्शाती है। यह भारतीय शिक्षा प्रणाली पर कटाक्ष भी करती है। समाज की सोच है कि अंधे लोग भीख मांगने, मोमबत्ती बनाकर ही जीवनयापन कर सकते हैं, जैसे संवाद झकझोरते है। यह फिल्म भारत और पश्चिम देशों के बीच सोच के गहरे अंतर को भी दर्शाती है। 12वीं की बोर्ड परीक्षा में टॉप करने के बावजूद भारतीय इंस्टीट्यूट श्रीकांत को दाखिला नहीं देते, लेकिन चार अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों उनकी योग्यता के आधार पर उन्हें मौका देते हैं। बीच-बीच में कलाम (जमील खान) की कही बातें किस प्रकार श्रीकांत को आगे बढ़ने को प्रेरित करती हैं वह याद रह जाता है। यह फिल्म आम लोगों के नेत्रहीनों के प्रति दृष्टिकोण को भी रेखांकित करती हैं। फिल्म में कई पल आते हैं जब आंख भर आती है और गला रुंध जाता है। मध्यांतर के बाद फिल्म थोड़ा खिंची हुई लगती है। उसमें थोड़ा दोहराव भी है। हैदराबाद में सेट कहानी में स्थानीय भाषा और परिवेश का स्वाद नजर नहीं आता है। फिल्म का दारोमदार राजकुमार राव के कंधों पर है। वह एक बार फिर साबित करते हैं कि चुनौतीपूर्ण भूमिकाओं में उनका कोई सानी नहीं है। हिंदी सिनेमा में नेत्रहीनों को काले चश्मा पहनाकर, हाथ में छड़ी देकर प्रदर्शित किया जाता रहा है, लेकिन राजकुमार श्रीकांत की भावभंगिमाओं को शिद्दत से आत्मसात करते हैं।

उनकी प्रेमिका स्वाति की भूमिका में अलाया एफ मासूम लगी हैं। उनका पात्र श्रीकांत के राह भटकने पर उसे सचेत करने का काम करती है। हालांकि, उनके किरदार को थोड़ा गहराई से दर्शाने की जरूरत थी। टीचर की भूमिका में नजर आई ज्योतिका का काम सराहनीय है। उनके जीवन के बारे में भी फिल्म कोई बात नहीं करती। लेकिन, यह सच है कि इन दो महिलाओं के कारण ही श्रीकांत का जीवन बदल सका। रवि की भूमिका में शरद केलकर जंचते हैं। फिल्म में आमिर खान की फिल्म 'कयामत से कयामत तक' का गाना पापा कहते हैं बड़ा नाम करेगा का रीक्रियेटेड वर्जन भावों को बढ़ाता है। तनिष्क बागची और सचेत-परंपरा द्वारा संगीतबद्ध गाना 'तू मिल गया' और 'तुम्हें ही अपना मानना है' कहानी साथ सुसंगत है। आम बायोपिक फिल्मों की तरह महिमामंडन करने के बजाए यह फिल्म दृष्टिहीनों के प्रति बनी धारणा को तोड़ने, उनकी प्रतिभा का सम्मान करने और समान अवसर देने की बात करती है।

मूवी : श्रीकांत, आ रहा है सबकी आंखें खोलने

रेटिंग : साढ़े तीन स्टार

कलाकार : ज्योतिका, राजकुमार राव, अलाया एफ, शरद केलकर, जमील खान

निर्देशक : तुषार हीरानंदानी

निर्माता : भूषण कुमार

लेखक : जगदीप सिद्धू, सुमित पुरोहित

प्रबंध संपादक: दिनेश के सिंह ❁ संपादक: हीरेन्द्र झा ❁ सलाहकार संपादक: चारुल मल्लिक, राजेश शर्मा, गीता सिंह ❁ डिज़ाइनर: मो. हसमतुल्लाह अंसारी

RNI-DELHIN/2013/51353